

जैन दिवाकर स्मृति ग्रंथ (फोल्डर नं. ०२०२१)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

अपनी बात

शुभकामना सन्देश

अनुक्रमणिका

प्रथम विभाग – एक पारस-पुरुष का गरिमामय जीवन

एक शाश्वत धर्म-दिवाकर ----- १

उद्भव-एक कल्पांकुर का ----- ८

उदय-धर्म दिवाकर का ----- २१

द्वितीय विभाग-घटनाओं में बोलता व्यक्तित्व-स्मृतियों के स्वर

वाणी के देवता ----- १०५

वशीकरण मन्त्र----- १०७

सन्त वाणी का असर ----- १०८

अनुभूत प्रसंग ----- १०९

समय की बात ----- १११

व्यक्तित्व की अमिट छाप ----- ११२

अन्तिम दर्शन ----- ११३

नजर भर देखा तो ----- ११७

लोहामण्डी सोनामण्डी बन गई ----- ११८

अफीम भी गुड बन गया ----- १२०

आध्यात्मिक ज्ञान की जलती हुई मशाल ----- १२२

क्या ये चमत्कार नहीं हैं ----- १२८

क्या चौथामलजी महाराज पधारे हैं ----- १२९

जैसी करनी-वैसी भरनी ----- १३०

पाँच मिनट में भीड़ ----- १३१

युग का एक महान् चमत्कार ----- १३२

तृतीय विभाग-अहिंसा और सदाचार की प्रेरणा के साक्ष्य – ऐतिहासिक दस्तावेज ----- १३३-१७२

चतुर्थ विभाग – शाश्वत दिवाकर को श्रद्धा का अर्घ्य – भक्ति भरा प्रणाम

शताब्दी पुरुष को प्रणाम ----- १७३

हमारी सच्ची श्रद्धांजलि ----- १७४

चौथ मुनि चारु चतुर ----- १७५

जगवल्लभ जैन दिवाकर ----- १७६

देखा मैंने ----- १७७

एक महकता जीवन पुष्प -----	१७८
वह कालजयी इतिहास पुरुष -----	१७९
पवित्र प्रेरणा-----	१८०
मुनिवर तुमने जन-मानस में -----	१८१
जन-जन के हृदय मन्दिर के देवता -----	१८२
शत-शत तुम्हें वन्दन -----	१८३
युगप्रवर्तक श्री जैन दिवाकरजी -----	१८४
गंगारामजी री आंख्यां रा उजाला रो -----	१८५
सच्चे सन्त और अच्छे वक्ता -----	१८७
विश्व वन्दनीय जैन दिवाकर -----	१८९
शतशः प्रणाम -----	१९०
धण्णो य सो दिवायरो -----	१९१
नयनों के तारे -----	१९१
श्रद्धा के सुमन -----	१९२
गीत -----	१९२
बहुमुखी प्रतिभा के धनी -----	१९३
जिनके पद में -----	१९४
एक क्रांतदर्शी युग पुरुष -----	१९५
महायोगी को वन्दन -----	१९५
जैन दिवाकर ज्योति -----	१९६
जैन दिवाकर-जग दिवाकर -----	१९७
श्रद्धा सुमन -----	१९७
सन्त परम्परा की एक अमूल्य निधि -----	१९८
श्रद्धा के दो सुमन -----	१९८
प्रेम की हिलोरेमें उठी -----	१९९
परोपकारी जीवन -----	१९९
भावांजली -----	२००
एक अद्भुत पुरुष -----	२००
जीवन के सच्चे कलाकार -----	२०१
वन्दना-----	२०१
प्रणाम, एक सूर जको -----	२०२
जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म -----	२०४
सफलजीवन का रहस्य -----	२०५
विराट व्यक्तित्व के धनी -----	२०६
हे जन जागृति के दिव्य दूत -----	२०७

जैन दिवाकर दिव्य द्वादशी -----	२०८
सम्पूर्ण मानवता के दिवाकर -----	२०९
दिवाकर-एक आधार -----	२०९
शत-शत प्रणाम -----	२१०
अद्भुत योगी -----	२१०
धर्मज्योति को नमन -----	२११
तेजस्वी पुण्यात्मा -----	२१२
अहिंसा धर्म के महान् प्रचारक -----	२१२
उच्चकोटि के व्याख्यानदाता -----	२१३
चौमुखी व्यक्तित्व के धनी -----	२१४
पतितोद्धारक सन्त -----	२१४
शुभ कामनाएं और प्रणाम -----	२१४
दुःखियारों के परम सखा -----	२१५
वात्सल्य के प्रतीक -----	२१५
जाज्वल्यमान नक्षत्र -----	२१५
एकता-करुणा-संवेदना की त्रिवेमी -----	२१५
लोकोपयोगी के अवसर पर व्यक्तित्व कुछ श्रद्धांजलियाँ -----	२१६-२१७
श्रद्धा के सुमन -----	२१७
जय बोलो जैन दिवाकर की -----	२१८
जैन जग के दिवाकर की -----	२१८
मानवता की सेवा में निरत -----	२१९
जीवित अनेकान्त -----	२२१
जैन दिवाकर -----	२२२
एक देवदूत की भूमिका में -----	२२३
उनकी अविनाशी यश -----	२२४
वन्दन तुमको -----	२२४
अभिनन्दन -----	२२५
भारत के नूर थे -----	२२५
केवल स्मृतियाँ शेष -----	२२६
दिवाकर -----	२२७
भाव-प्रणति -----	२२८
जैन दिवाकर अभिनन्दन है-----	२२९
अपनी आप मिसाल थे -----	२३०
श्री जैन दिवाकरजी म. का समाज के प्रति योगदान -----	२३१
सद्धंजली -----	२३२

महामानव -----	२३३
वर समणो जिण दिवायरो -----	२३४
दिवाकर पचीसी -----	२३५
गुलाब-सा सुरभित जीवन -----	२३७
पूज्य गुरुदेव जैन दिवाकरजी-----	२३७
वन्दना-----	२३८
श्री चौथमलजी महाराज को सम्प्रदाय में न बाँधे -----	२४१
दिवाकर स्तुति -----	२४१
अनुकरणीय आदर्श-शतशः नमन -----	२४२
जैन दिवाकर-दिवाकर का योग -----	२४२
वन्दना हजार को -----	२४३
दिव्य ज्ञान की खान -----	२४३
तप त्याग की महान् ज्योति -----	२४४
हीरे की कनी थी -----	२४४
सार्थक नाम -----	२४५
भक्त सहारे -----	२४५
जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमलजी जित् प्रशस्ति -----	२४६
जैन दिवाकर-जग दिवाकर -----	२४७
श्रद्धार्चन -----	२४७
एक अद्भुत फूल था -----	२४८
ज्योतिर्मान गुरुदेव -----	२४८
जैन दिवाकर पंच पंचाशिका -----	२४९
दिवाकर श्रद्धांजलि -----	२५५
गीत -----	२५६
पंचम विभाग-जैन दिवाकर व्यक्तित्व की बहुरंगी किरणें	
महामहिम जैन दिवाकरश्री चौथमलजी महाराज -----	२५७
मुनि श्री चौथमलजी-एक विलक्षण समाज शिल्पी -----	२५८
युग पुरुष जैन दिवाकर जी महाराज -----	२६२
श्रद्धा सुमन -----	२७०
ज्योतिवाही युग-पुरुष श्री चौथमलजी महाराज -----	२७१
एक पारस-पुरुष श्री जैन दिवाकरजी -----	२७४
एक सम्पूर्ण सन्त पुरुष-----	२७६
जैन दिवाकर जी महाराज की कुछ यादें -----	२८१
समाज-सुधार के अग्रदूत -----	२८३
विश्वमानव मुनि श्री चौथमलजी महाराज -----	२९५

चौथमल-एक शब्दकथा -----	२९७
सन्तों की पतितोद्धारक परम्परा और मुनिश्री चौथमलजी महाराज -----	२९९
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, गुरुदेव श्री जैन दिवाकर जी -----	३०६
लोक-चेतना के चिन्मय खड़लाडी -----	३१५
श्री जैन दिवाकरजी महाराज की संगठनात्मक शक्ति के जीवित स्मारक -----	३१८
भारत के एक अलौकिक दिवाकर -----	३२२
सामाजिक समता के स्वप्न द्रष्टा -----	३२६
श्रमण-परम्परा में जैन दिवाकर जी महाराज का ज्योतिर्मय व्यक्तित्व -----	३३१
पीड़ित मानवता के मसीहा-श्री जैन दिवाकरजी -----	३३८
समाज-सुधार की दिशा में श्री जैन दिवाकर जी के युगान्तकारी प्रयत्न -----	३४३
समाज-सुधार में सन्त परम्परा एवं श्री जैन दिवाकरजी महाराज -----	३४९
अन्त्योदय तथा पतितोद्धार के सफल सूत्रधार -----	३६०
साहित्य में सत्यं शिवं सुन्दरं के संस्कर्ता -----	३६३
जैन इतिहास के एक महान् प्रभावक तेजस्वी सन्त -----	३७५
श्री जैन दिवाकरजी महाराज के सुधारवादी प्रयत्न राजनैतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य -----	३८२
संस्कार परिवर्तन तथा सुसंस्कार निर्माण में श्री जैन दिवाकरजी का योगदान -----	३८७
दृढ निश्चयी पथ-प्रदर्शक सन्त -----	३९२
मुनि श्री चौथमलजी महाराज के काव्य में सामाजिक चेतना के स्वर -----	३९५
मानव धर्म के व्याख्याता श्री जैन दिवाकरजी महाराज -----	४०१
गुरु आत्मा के साथी -----	४०४
षष्ठम विभाग – हृदयस्पर्शी और ओजस्वी प्रवचन कला – एक झलक	
श्री चौथमलजी महाराज की प्रवचन कला -----	४०५
प्रसिद्धवक्ता श्री जैन दिवाकर जी महाराज के प्रेरक प्रवचनांश -----	४११
वाणी के जादूगर श्री जैन दिवाकर जी महाराज -----	४१८
विचारों के प्रतिबिम्ब -----	४२१
सप्तम विभाग-भक्ति, उपदेश, वैराग्य और नीति की स्वर चेतना गुम्फित में	
भक्ति-स्तुति प्रधान पद -----	४२९
वैराग्य-उपदेश प्रधान पद -----	४३७
अष्टम विभाग - चिन्तन के विविध बिन्दु-धर्म, दर्शन, संस्कृति इतिहास	
आत्मा-दर्शन और विज्ञान की दृष्टि में – श्री अशोककुमार सक्सेना -----	४४९
आत्मसाधना में निश्चयनय की उपयोगिता – श्री सुमेर मुनिजी -----	४५७
नयवाद-विभिन्न दर्शनों के समन्वय की अपूर्व कला – श्रीचन्द्र चोरड़िया -----	४६५
श्रुतज्ञान एवं मतिज्ञान-एक विवेचन – डॉ. हेमलता बोलिया -----	४७५
जैन परम्परा में पूर्वज्ञान-एक विश्लेषण – मुनिश्री नगराजजी -----	४७९
सदाचार के शाश्वत मानद्ड और जैन धर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	४८६

ईश्वरवाद बनाम पुरुषार्थवाद – डॉ. कृपाशंकर व्यास -----	५०१
कर्म-बन्धन एवं मुक्ति की प्रक्रियाएँ – मुनिश्री समदर्शीजी -----	५०७
जैन-दर्शन में मिथ्यात्व और सम्यक्त्व-एक तुलनात्मक विवेचन – डॉ. सागरमल जैन -----	५१९
जैन साहित्य में गाणितिक संकेतन – डॉ. मुकुटबिहारीलाल एम. -----	५४९
ऐतिहासिक चर्चा-धर्मवीर लोकाशाह – डॉ. तेजसिंह गौड़ -----	५५६
श्री जैन दिवाकरजी महाराज की गुरु परम्परा - श्री मूलमुनिजी -----	५६९
परिशिष्ट – सहयोगी परिचय	